www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पीड़ित मानवता की सेविका—फ्लोरेंस नाइटिंगेल

युग निर्माण योजना, मथु
झोला पुस्तकालय ज्ञान मंदिर,
क्र० ..... दि० .....
१.१.६२.
प्रो. म. गौर वानप्रस्थी
श्री वानप्रस्थी कुटीर होशंगाबाद
१६६
3/86



लेखक :—

श्री सत्यभक्त

Free Read/Download & Order 2000+ books authored by Yugrishi Pt. Shri Ram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पीड़ित मानवता की सेविका

फ्लोरेंस नाइटिंगेल

संसार के सामाजिक इतिहास में स्त्रियों की स्थिति सदा से प्रायः पराश्रित जैसी रही है। यद्यपि मानव सभ्यता की आदिम अवस्थामें घर गृहस्थी की बागडोर पूर्ण रूप से उन्हीं के हाथ में थी और अनेक प्रदेशों में पुरुष के बजाय उसी को परिवार का मुखिया माना जाता था, तो भी शारीरिक शक्ति में पुरुष से न्यून होने और प्रसवावस्था में कुछ समय तक सर्वथा असहाय हो जाने के कारण उसे प्रायः पुरुष का आधिपत्य स्वीकार करना ही पड़ा। फिर बीच के समय में तो ऐसी स्थिति आ गई जबकि स्त्रियों की दशा दास (गुलामों) जैसी हो गई। उस समय शक्तिशाली और सत्ताधीश व्यक्ति सैकड़ों स्त्रियों को पत्नी, रखैली और दासियों के रूप में रखा करते थे। हम नहीं कह सकते कि द्वारकाधीश महाराज श्रीकृष्ण की सोलह हजार रानियाँ होने की कथा में सत्य का कितना अंश है, पर राजस्थान के एक कामुक राजा के महलों में लगभग हजार स्त्रियाँ तो अब से पचास वर्ष पहले ही मौजूद थीं, जिनमें से अधिकांश को महाराज की शारीरिक सेवा तथा मनोरंजन के लिये खरीदकर इकट्ठा किया गया था। अनेक स्थानों में बहुसंख्यक स्त्रियों को इसलिये भी 'पत्नी' के रूप में ग्रहण कर लिया जाता था कि उनसे परिश्रम कराके स्वयं निश्चिन्त या आलसी जीवन व्यतीत किया जा सके।

स्त्रियों की ऐसी पराधीन अवस्था में यदि अधिकाँश स्त्रियों का जीवन घर के चूल्हा-चक्की तक ही सीमित रहता है और सांसारिक अनुभव की दृष्टि से वे कूप-मण्डूक ही बनी रहती हैं तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। विशेषकर हमारे भारतवर्ष में, जहाँ बड़े घरों और उच्च जातियों की स्त्रियों को तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर्दे के भीतर बन्द रखा जाता हो और छोटी जाति की स्त्रियाँ गाय बैलों की तरह घर के काम-काज और खेतों में परिश्रम के लिये उपयोगी समझी जाती हों, वहाँ सामाजिक या राष्ट्रीय क्षेत्र में स्त्रियों का किसी रूप में आगे बढ़कर कोई उल्लेखनीय कार्य कर सकना कहाँ तक सम्भव हो सकता था ? यही कारण है कि हमारे देश में नव जागरण-काल को आरम्भ हुए ७०-८० वर्ष और स्वाधीनता प्राप्त किये २२ वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी अभी ऐसी दस-बीस स्त्रियों के नाम संग्रह कर सकना भी कठिन है, जिन्होंने पुरुषों के समान समाज-सेवा, देश-सेवा या मानव-सेवा के कार्यों में कीर्ति या यश प्राप्त किया हो। वैसे चरित्र, सेवा-भाव, त्यागमय-जीवन की दृष्टि से भारतीय स्त्रियाँ प्राचीन काल से आजतक प्रसिद्ध रही हैं, पर उनके ये समस्त गुण और विशेषतायें परिवार के अत्यन्त सीमित क्षेत्र में ही समाप्त हो जाती हैं। कभी लाखों करोड़ों स्त्रियों में से एकाध अवसर पा जाने से अपनी योग्यता का परिचय दे सकी हो तो उसे अपवाद की तरह मान लिया जाता है।

ऐसी अवस्था में जब हम विदेशों की उन अनेक महिलाओं का वर्णन पढ़ते हैं, जिन्होंने मानव-सेवा और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में पुरुषों के समान ही महत्व के कार्य किये हैं तो हमारे हृदय में उनके प्रति आन्तरिक श्रद्धा-भाव उत्पन्न होता है। जब हम यह देखते हैं कि इन देवियों ने स्वेच्छा से संसार के समस्त सुखों का त्याग करके कठिनाइयों का जीवन स्वीकार किया और आजीवन परिश्रम करके लाखों-करोड़ों व्यक्तियों के कष्टों को दूर किया तो उनको एक दैवी आत्मा मानकर भक्तिभाव से मस्तक झुकाना ही पड़ता है। ऐसी ही एक परम पूज्य देवी 'फ्लोरेन्स नाईटिंगेल' थी, जिसके अद्भुत त्याग और अपूर्व सेवा-भाव की गाथा आज देश और विदेशों में लिखी और पढ़ी जाती है।

नाईटिंगेल (सन् १८२० से १९१०) का जन्म इङ्गलैंड के एक धनी परिवार में हुआ था। उस समय तक उस तरह के बड़े घरों की कन्यायें सिवाय सङ्गीत, नृत्य और शानदार उत्सवों में भाग लेने के और कुछ नहीं करती थीं। उनके जीवन की सबसे बड़ी सफलता यही मानी जाती थी कि वे किसी बड़े और माननीय युवक को आकर्षित करके उसकी सहधर्मिणी बन जायें और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवनभर 'भद्र-समाज' के सभा-समाजों और जलसों की शोभा बढ़ाती रहें। पर न जाने किस दैवी-प्रेरणा से नाइटिंगेल इस मार्ग से बाहर निकल गई। कहा जाता है कि जब वह ६ वर्ष की थी तभी कहा करती थी कि 'ईश्वर ने ७ फरवरी १८३७ में मुझे अपनी सेवा के लिये बुलाया है।' वह ये शब्द ईश्वर पर दृढ़ विश्वास और बाल सुलभ प्रेरणा से ही कहती थी, पर वह यह नहीं समझती थी कि वह 'सेवा' क्या होगी और कहाँ तथा कैसे की जायगी ? पर इस बात से हम यह अनुमान कर सकते हैं कि जैसे संसार की अनेक महान घटनाओं में एक प्रकार की 'दैवी प्रेरणा' दिखाई पड़ा करती है, वैसा ही कोई अदृश्य और अज्ञात प्रभाव नाइटिंगेल पर भी पड़ रहा था।

नाइटिंगेल का ध्यान आरम्भिक अवस्था से ही गरीबों और दुःखियों की दुर्दशा की ओर चला गया था। वैसे उसके माता-पिता भी बड़े दयालु स्वभाव के थे। वे अपने गरीब पड़ोसियों की सहायतार्थ सदा प्रस्तुत रहते थे। तो भी उनका व्यवहार वैसा ही था जैसा बड़े आदमी छोटों के ऊपर कृपा करके किया करते हैं। पर नाइटिंगेल को केवल इतने 'परोपकार' से सन्तोष नहीं होता था। वह दूसरों का दुःख देखकर स्वयं दुःखी हो जाती थी। गरीब और साधनहीन लोगों की दीनावस्था देखकर उसे अपनी सम्पन्नता और सुख-सामग्री की बहुलता खटकने लगती थी। वह सोचती थी कि भगवान ने सब लोगों को सुखी और सम्पन्न ही क्यों न बनाया ? इस प्रकार की भावनाओं का परिणाम यह हुआ कि युवावस्था में ही वह त्याग और संयम का जीवन बिताने लगी। वह सदा ऐसे अवसर ढूँढ़ती रहती थी जब किसी अभावग्रस्त की किसी प्रकार की सेवा-सहायता करने का अवसर प्राप्त हो सके।

यद्यपि नाइटिंगेल सभी दीन-दुःखियों की सहायतार्थ तत्पर रहती थी, पर उसका विशेष ध्यान 'रोगी परिचर्या' की तरफ था। उस समय तक अस्पतालों का प्रचार कम ही हुआ था और उनकी व्यवस्था सन्तोषजनक नहीं थी। उनमें रोगियों की सेवा के लिये आजकल की तरह 'नर्सों' (दाइयों) की व्यवस्था नाम मात्र को ही आरम्भ हुई थी। इस कार्य को हीनता का समझा जाता था, जिससे केवल बहुत छोटे और सभ्यता-शिष्टता की दृष्टि से पिछड़े घरों की स्त्रियाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही इस कार्य के लिये तैयार होती थीं। उनको वेतन बहुत कम दिया जाता था, इस कारण वे अपना काम भी बड़ी लापरवाही से करती थीं। उनका रहन-सहन बहुत गन्दा और चरित्र निम्न स्तर का था। इससे रोगियों को अस्पतालों में भी आराम नहीं मिलता था, घरों में तो नर्सों के आकर सेवा करने का रिवाज ही जारी नहीं हुआ था। इसलिये सभी व्यक्तियों को बीमारी की दशा में बहुत कष्ट उठाना पड़ता था और मृत्यु का औसत भी वर्तमान समय की अपेक्षा कहीं अधिक था।

नर्सिङ्ग (धात्र-विद्या) की शिक्षा प्राप्त करना—

जब सामान्य दर्जे के लोग भी अस्पताली नर्सों के धन्धे को नीची निगाह से देखते थे तो नाइटिंगेल के पिता-माता, जो उच्चवर्ग के सम्मानित सदस्य थे, अपनी पुत्री को कैसे इस कार्य की अनुमति दे सकते थे ? उन्होंने सैर-तमाशे और मनोरंजन के विविध साधनों द्वारा उसके विचारों को बदलना चाहा और एक मित्र के साथ उसे रोम की सैर करने को भेज दिया। उनका ख्याल था कि रोम की शान-शौकत और शिल्प-सौन्दर्य को देखकर, उसका ध्यान उच्च कोटि की कलाओं की तरफ चला जायगा। पर वहाँ पहुँचकर नगर की शोभा और मूर्तियों की कला को देखने के बजाय वह 'रोमन कैथलिक सिस्टर्स' के सेवा कार्यों का अवलोकन करने लगी और प्रत्यक्ष अनुभव करने की अभिलाषा से 'पवित्र हृदय मठ' नामकी संस्था में दस दिन तक निवास करने चली गई। वहाँ रहकर उसने उक्त संस्था के संगठन और कार्य-प्रणाली का अध्ययन किया।

रोम में ही उसकी भेंट इंगलैण्ड के भूतपूर्व युद्ध सचिव श्री सिडनी हर्बर्ट से हो गई। इन दोनों के सेवा भावी विचार एक दूसरे से मिलते थे, इसलिये शीघ्र ही दोनों में घनिष्ठ मित्रता का सम्बन्ध हो गया। पर इससे यह समझना कि इन दोनों में किसी प्रकार का दूषित मनोभाव था, गलती होगी। यह सत्य है कि हमारे देश में पुरुष-स्त्री की मित्रता का अर्थ प्रायः यही लिया जायगा कि उन दोनों में यौन-सम्बन्ध है। पर अँग्रेजी समाज में यह बात नहीं। श्री हर्बर्ट एक धार्मिक वृत्ति के और विवाहित सज्जन थे तथा उनकी धर्मपत्नी से भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नाइटिंगेल की गाढ़ी मित्रता थी। एक श्री हर्बर्ट ही क्या नाइटिंगेल की योग्यता, सद्व्यवहार, आकर्षक वाणी और शारीरिक सौन्दर्य के कारण उसके अनेक मित्र हो गये थे, और अनेक उच्च पदस्थ व्यक्ति उससे विवाह करने को भी इच्छुक थे। पर उसका ध्यान 'सेवा-कार्य' की तरफ इतना अधिक था कि उसने घर गृहस्थी का भार अपने ऊपर लेना पसन्द ही नहीं किया।

यात्रा और चिकित्सालयों का अनुभव—

रोम में ६ मास बिताने के पश्चात् नाइटिंगेल अपने घर वापस आ गई। वह 'नर्स' के कार्य की व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त करना चाहती थी, पर इंगलैण्ड में इसकी कोई समुचित व्यवस्था नहीं थी। इसके लिये कुछ स्त्रियों को वहाँ के 'सेल्सबरी अस्पताल' में रखकर यह कार्य साधारण रूप से सिखा दिया जाता था। नाइटिंगेल ने वहीं जाने की इच्छा प्रकट की। पर एक तो वहाँ बहुत अधिक भ्रष्टाचार फैला हुआ था और दूसरे जो स्त्रियाँ वहाँ जाती थीं वे समाज के बहुत निम्न स्तर के परिवारों की होती थीं। इसलिये नाइटिंगेल के माता-पिता ने उसको वहाँ जाने की अनुमति नहीं दी। तब वह इस उद्देश्य से योरोप के अन्य देशों की यात्रा के लिये चल दी कि जहाँ उसे इस विषय की उपयुक्त शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होगा वहीं रहकर इसका ज्ञान प्राप्त करेगी। सन् १८४९ में वह पेरिस पहुँची। वहाँ 'कैथोलिक मिशन' की दो 'सिस्टर्स' से उसकी पहिचान हो गई। उनका परिचय-पत्र लेकर वह पूरा योरोप पार करके मिश्र के 'अलैकजैंड्रिया' नगर में पहुँची जहाँ उक्त संस्था के कई अस्पताल और स्कूल चलाये जा रहे थे। यहीं उसने सबसे पहले अस्पतालों के प्रबन्ध में अनुशासन का सबक सीखा।

मिश्र से वापस लौटते समय नाइटिंगेल जर्मनी के 'कैसरवर्थ' में ईसाई धार्मिक महिलाओं की धातृ-विद्या सम्बन्धी संस्था को देखने गई और वहाँ १५ दिन ठहर कर उनकी कार्य प्रणाली को देखा। उसे मालूम हुआ कि उसमें जो स्त्रियाँ कार्य सीखने आती हैं, वे वेतन के लोभ से नहीं आतीं वरन् उनके हृदय में दीन-दुःखियों की सेवा के भाव पूरी तरह मौजूद हैं, और वे अपना धर्म-कर्तव्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समझकर ही इस कार्य को करती हैं। नाइटिंगेल ने इंगलैण्ड लौटकर अपने माता-पिता को इस संस्था का हाल बताया। कुछ महीने बाद वह अपनी एक बहिन के साथ पुनः 'कैसरवर्थ' गई और चार महीने तक रहकर वहाँ की पूरी शिक्षा प्राप्त की। उसे एक पादरिन के कठोर नियंत्रण में रहना पड़ता था, बड़े सवेरे उठकर अपना समस्त सेवा-कार्य स्वयं करना होता था, भगिनी-समाज का बहुत साधारण भोजन करना पड़ता था और तब धातृ-विद्या सम्बन्धी व्याख्यानों को कई घण्टे तक सुनना पड़ता था। एक बड़े घर की कोमल और सुकुमार प्रकृति की नारी के लिये इस प्रकार का जीवन निस्सन्देह कठिन और आत्म-त्याग का था। पर उसकी 'सेवा-भाव' की लगन सच्ची थी, इसलिये वह वहाँ प्रसन्नता पूर्वक ठहरी रही। उसे संतोष था कि वहाँ रहकर वह उस ज्ञान को प्राप्त कर रही है, जो उसके महान उद्देश्य की पूर्ति के लिये आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त नाइटिंगेल ने अन्य कितने ही ऐसे स्थानों की यात्रा की जहाँ रोगियों का सेवा का कार्य उत्तम रीति से चलाया जा रहा था। इसका वर्णन करते हुये 'पश्चिमी मानव सेविकाएँ' नामक पुस्तिका में बतलाया है—'नाइटिंगेल ने चेष्टा करके वे ही स्थान तलाश किये जहाँ दुःखियों और मोहताजों के लिये किसी प्रकार का अच्छा कार्य किया जा रहा था। कई बार उसने सोचा और अन्त में यही निश्चय किया कि उसे केवल वही काम चुनना चाहिये जिसकी उसके देश में आवश्यकता हो और जिसके वहाँ पूरा हो सकने की संभावना हो। उसका काम एक 'नेता' की तरह केवल मार्ग प्रदर्शन और संकेत कर देना नहीं है। उसे तो अपना रास्ता स्वयं परिश्रम करने बनाना होगा। योरोपीय महाद्वीप की यात्रा करने के पश्चात् वह उस मार्ग के अवलम्बन करने का दृढ़ निश्चय लेकर लौटी जिस पर चलना उसने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। वह जानती थी कि सारे दुराग्रहों और कड़े से कड़े विरोधों को उसे स्वयं अपने हाथों से दूर करना होगा। उसने अपने आस पास और लन्दन नगर में जीवन के उस खोखलेपन का अनुभव किया, जो सामाजिक रूढ़ियों के कारण उसे मानव-सेवा करने से रोक रहा था। ऐसी मनोभावना और परिस्थिति में उसने अपने एक मित्र को लिखा—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस वर्ष भी कुछ कार्य न हो सका। और न मुझे विश्वास है कि आगे चलकर हो सकेगा। मुझे अपने युवावस्था के जीवन से इसके अतिरिक्त और कोई लाभ नहीं जान पड़ता कि मेरी आयु का एक-एक वर्ष निष्फल होकर न्यून होता जाता है। मैं कभी किसी कार्य के योग्य न हो पाऊँगी। मेरा जीवन धूल और राख से भी गया बीता हो रहा है। हे ईश्वर! मेरा क्या होगा? इन सब बातों से मेरा निस्तार कैसे होगा? मुझे कुछ करने का अवसर दीजिये!'

नाइटिंगेल किस लिये दुःखित थी? उसे भरा-पूरा परिवार, बहिन-भाई, दास-दासी सब कुछ उपलब्ध थे, और 'उच्च श्रेणी' के कहलाने वाले सांसारिक मनुष्य भी जो कुछ करते हैं उसका उद्देश्य इन्हीं वस्तुओं को प्राप्त करना होता हैं। अगर इस स्थिति को 'ईमानदारी' का व्यवहार करके प्राप्त किया जा सके तो आजकल की दुनिया में उसे कोई बुरा भी नहीं कहता। पर फिर भी नाइटिंगेल अपनी आत्मा के भीतर एक व्याकुलता और घोर अभाव का अनुभव कर रही थी। उसे सदैव यही जान पड़ता था कि इस प्रकार खाने-पीने और सुख-पूर्वक समय व्यतीत कर देने में जीवन की सार्थकता नहीं है। भगवान ने हमको केवल इन्हीं बातों के लिये संसार में नहीं भेजा है, मानव-जीवन का उद्देश्य इससे बहुत ऊँचा हैं। अच्छा भोजन, वस्त्र, मकान आदि तो भले-बुरे, सज्जन-दुष्ट, परिश्रमी -आलसी सभी को मिल सकता है। पर यदि हमारा जीवन दूसरों के लिये उपयोगी सिद्ध नहीं होता, हम भगवान की सृष्टि को अधिक उत्तम, रहने योग्य बनाने में कुछ योगदान नहीं करते तो वह जीवन 'सार्थक' नहीं कहा जा सकता।

हम समझते हैं कि ये विचार हमारे यहाँ के अधिकांश नर नारियों को कुछ अजीब-से जान पड़ेंगे। यहाँ के अधिकाँश व्यक्ति तो अभी 'सामाजिकता' का अर्थ ही नहीं समझते। अपने छोटे से परिवार या अल्प संख्यक बिरादरी (जाति) के घेरे के भीतर रहकर, उसके रीति रिवाजों का पालन करते हुये, अगर वे अच्छी तरह कमा और खा सकते हैं तो वे इसको अपने जीवन की पूर्ण सफलता मान लेते हैं। इससे यदि किसी का विचार आगे बढ़ता है और वह धर्म-कर्म को भी जीवन में एक आवश्यकता मानता है, तो वह थोड़ी देर किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तरह की पूजा-पाठ, देवोपासना, कथा-कीर्तन आदि कर लेता है और संतुष्ट हो जाता है कि उसने 'ईश्वर को प्रसन्न' कर लिया । पर दूसरे लोगों के कष्टों या अभावों को देखकर इतना दुःखी हो जाना कि उनको अपना 'सुखी-जीवन' भी भारी पड़ जाय—इसे वे एक भावुकता ही समझते हैं । वे ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा में चाहे मुँह पर दो-चार बातें कह दें पर मन में और पीठ पीछे उसे मूर्ख या सनकी ही बतलायेंगे !

खेद है कि जिस देश के मनीषियों ने सर्व प्रथम आत्मा की एकता और मनुष्यमात्र के भ्रातृ-भाव का संदेश संसार को दिया, जिन्होंने अपना समस्त धन-सम्पत्ति, राजपाट ही नहीं वरन् अपनी हड्डियाँ तक दूसरों के हितार्थ अर्पण कर दी, आज उन्हीं की सन्तानों को 'परोपकार' और 'सेवाधर्म' का महत्व समझाना कठिन हो गया है । एक पश्चिमी देशों के नर नारी हैं जो प्रत्यक्ष में भौतिक-वादी होने पर भी अपने आपद्ग्रस्त देशवासियों की सहायता के लिये तन-मन-धन अर्पण करने को तुरन्त तैयार हो जाते हैं और एक हमारे ये भाई हैं, जिन्हें इस प्रकार के कामों में सिवाय मूर्खता अथवा बहक जाने के अतिरिक्त और कुछ नजर ही नहीं आता !

अब नाईटिंगेल ने 'नर्स' के पेशे में पदार्पण करने का निश्चय कर लिया । उस समय वह समस्त इंगलैण्ड में इस विद्या की सबसे बड़ी जानकार और सब प्रकार से सुयोग्य और चरित्रवान महिला थी । सच पूछा जाय तो 'नर्स' का पेशा उसके समान किसी त्यागमयी देवी की ही राह देख रहा था । यद्यपि इस कार्य की आवश्यकता और महत्ता को सब मन में अनुभव करते थे, पर जब तक कोई उच्च कोटि की महिला उसमें हाथ नहीं डालती तब तक उसका उचित विकास और उद्धार होना संभव नहीं था । और किसी उच्च श्रेणी महिला का उसमें आना इसलिये कठिन था कि एक तो यह काम बड़ा परिश्रम साध्य और एक दृष्टि से अरुचिकर था, दूसरे उसका स्तर बहुत गिरा हुआ था, जिससे उच्च वर्ग की कोई भी महिला उसमें सम्मिलित होना अपने सम्मान की दृष्टि से हानिकारक समझती थी ।

अपने घर वालों तथा इष्ट-मित्रों की ऐसी विरोधात्मक भावनाओं के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कारण नाइटिंगेल भी अभी तक अपने विचारों को कार्य रूप में परिणित न कर सकी थी। यह बात नहीं कि वह उस समय 'नर्सों' की पतित और हेय स्थिति को न समझती हो, पर इसी दुरवस्था का सुधार करने के उद्देश्य से तो वह इस कार्य को स्वयं आरम्भ करना चाहती थी। उसकी इच्छा थी कि इस पेशे का इस प्रकार सुधार किया जाय और सच्ची सेवा-भावना द्वारा उसे इतना पवित्र और सम्मानीय बनाया जाय कि किसी श्रेष्ठ स्त्री को उसमें भाग लेने में संकोच न जान पड़े। उसके शुभ-चिन्तक श्री सिडनी हर्बर्ट ने भी उसके इन विचारों का समर्थन किया और स्वयं मध्यस्थ बनकर उसके घर वालों से उसे अनुमति दिलादी।

सबसे पहले नाइटिंगेल को जिस संस्था का कार्यभार ग्रहण करना पड़ा उसका नाम था 'अमीर महिलाओं का स्वास्थ्य निकेतन' (सैनीटोरियम)। यह सन् १८५३ की बात है जब वह ३३ वर्ष की हो चुकी थी। इस कार्य में भी उसे पुराने प्रबन्धकर्ताओं द्वारा अनेक कठिनाइयों और विरोधों का सामना करना पड़ा, पर वह अब इस सम्बन्ध में इतना अनुभव प्राप्त कर चुकी थी कि शीघ्र ही उसने सब स्त्री-पुरुष कार्यकर्ताओं को अधिकार में कर लिया। उसकी कार्यकुशलता से संस्था का नाम कुछ ही महीनों में इतना बढ़ गया कि पुराने मकान को छोड़कर एक नया मकान लेना पड़ा। इस सम्बन्ध में उसका सबसे मुख्य सिद्धान्त था—सफाई। इस काम के लिये स्वच्छ वायु की आवश्यकता थी। अभी तक रोगियों के कमरों की खिड़कियाँ बन्द रखने का नियम था, पर नाइटिंगेल ने उनको खुला रखने का आदेश दे दिया और इससे रोगियों का स्वास्थ्य पहले की अपेक्षा शीघ्र सुधरने लगा। इस प्रकार के कितने ही सुधार उसने उक्त संस्था में किये, जिनसे उसकी ख्याति चिकित्सा क्षेत्र में दूर-दूर तक फैल गई। इसी समय सन् १८५४ के सितम्बर मास में क्रीमिया का युद्ध छिड़ गया। वैसे तो यह रूस और टर्की के बीच आरम्भ हुआ था, पर इंगलैण्ड ने टर्की का पक्ष लिया और अपनी सेना को क्रीमिया के युद्ध क्षेत्र में भेज दिया। उस समय वहाँ कितनी ही बातों की ठीक व्यवस्था नहीं हो सकी थी, जिससे सिपाहियों को तकलीफ उठानी पड़ती थी। खास कर घायलों और रोगियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की बड़ी दुर्दशा थी। साधनों की कमी और अधिकारियों की लापरवाही से उनकी स्थिति बड़ी असंतोषजनक हो रही थी। इसके फल से उनकी मृत्यु संख्या भी बहुत अधिक थी। इसका वर्णन करते हुये इंगलैंड के प्रमुख पत्र 'टाइम्स' के युद्ध-क्षेत्र स्थित सम्वाददाता ने निम्न लिखित पत्र भेजा था—

"सर्व साधारण के लिये यह बड़े आश्चर्य और दुःख का विषय है कि यहाँ घायलों की रक्षा के लिये उचित प्रबन्ध नहीं है। न तो यहाँ सर्जनों की ही पर्याप्त संख्या है, और न नर्स और पट्टी बाँधनेवाली स्त्रियों की ही। इस त्रुटि के लिये किसी को दोष न देकर यह समझ लेना चाहिये कि यह प्रचलित परिचर्या-प्रणाली का ही अपराध है। जहाँ घायलों के घावों पर पट्टियाँ बाँधने को वस्त्रों तक का अभाव हो, उसके सम्बन्ध में भला और क्या कहा जाय? स्कूटारी (युद्ध क्षेत्र के पास का कस्बा जहाँ अस्पताल काम कर रहा था) के अभागे निवासियों के दुःख को देख कर लोगों के हृदय में करुणा का समुद्र उमड़ रहा है, प्रायः सब ही परिवार पट्टी आदि की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिये अपनी पुरानी पोशाकें दे रहे हैं। परन्तु यह समझ में नहीं आता कि इस आनेवाली आवश्यकता का पहले ही ध्यान क्यों नहीं रखा गया? कभी-कभी यहाँ तक होता है, कि घायल लोग अलग पड़े घोर यंत्रणा सहते हुये मृत्यु की प्रतीक्षा करते रहते हैं, और उनके पास डॉक्टर झाँकने को भी नहीं आ पाते। जब रोगी एक विशाल भवन में लाये गये तो हमें आशा हुई कि वहाँ विचारों की ठीक देख-भाल की जायगी, परन्तु जब पता लगाया तो देखा कि वहाँ तो किसी मामूली अस्पताल के समान भी औजार आदि का प्रबन्ध नहीं है। ऐसी बुरी दशा में यदि रोगी मरने लगें तो आश्चर्य ही क्या? ब्रिटिश सेना के चिकित्सा विभाग की यह बड़ी भारी भूल है,जो वह अपने कर्तव्य की उपेक्षा करके मैले-कुचैले चिथड़ों की पट्टियों द्वारा अपने घायलों को चंगा करने की आशा कर रहा है।"

इस पत्र ने जनता में रोष की एक लहर फैला दी और सब विचारों के लोग सरकारी अधिकारियों पर दोषारोपण करने लगे। उस समय श्री सिडनी हर्बर्ट ही युद्ध सचिव का काम कर रहे थे। उनको तुरन्त नाइटिंगेल का ध्यान आया और उसे एक पत्र द्वारा सूचित किया कि 'घायलों के सम्बन्ध में सारे काम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



का निरीक्षण करने वाला वहाँ कोई नहीं है, क्या तुम जा सकती हो ?' इस पत्र को पढ़ते ही नाइटिंगेल को अनुभव हुआ कि बस 'ईश्वरीय बुलावे' का समय आ गया। उधर जनता की तरफ से युद्ध-क्षेत्र में लड़ने वाले सिपाहियों को सुख-सामग्री एकत्रित करने के लिये एक 'निधि' स्थापित की गई और 'नर्सों' (धायों) के लिये एक अपील प्रकाशित की गई। बड़ी शीघ्रता के साथ सब बातें तय की गईं और नाइटिंगेल को सरकारी तौर पर युद्ध-विभाग का एक पत्र मिला जिसके द्वारा वह टर्की में अंग्रेजी जनरल अस्पताल की 'स्त्री-सेवा-संस्था' की सुपरिन्टेन्डेण्ट मुकर्रर की गई। दो दिन पश्चात् २१ अक्टूबर १८५४ को वह 'स्कूटारी' के लिये रवाना हो गई। उसके साथ ३८ स्वयंसेविका 'नर्सों' का एक दल था, जिन्हें उसने उसी बीच जमा किया था और जिनकी वह परीक्षा कर चुकी थी।

सरकारी आज्ञा द्वारा नाइटिंगेल को भेजे जाने की घोषणा होते ही उसका नाम भी चारों तरफ फैल गया। लोग कहने लगे कि 'देखो यह कैसी सज्जन और सेवाव्रती है जो धनवान, सर्वप्रिय और आकर्षक होते हुये भी अपना सुख और समृद्ध जीवन त्यागकर भय, त्रास और कष्टों का सामना करने को तैयार है।' सेना के जिस प्रधान अफसर और रणक्षेत्र के प्रमुख चिकित्सा अधिकारी द्वारा इस कार्य के लिये धन का प्रबन्ध करना था, उस पर धन और उपहारों की वर्षा होने लगी और समस्त जनता इस बात के लिये कटिबद्ध हो गई कि सामग्री के अभाव से एक भी घायल अंग्रेज सिपाही को न मरने दिया जाय।

पर अब कुछ दुराग्रही लोगों ने एक नया ही राग छेड़ा। नाइटिंगेल ने जो दाइयाँ इकट्ठी की थीं उनमें रोमन कैथोलिक, ऐंग्लीकन और अन्य सम्प्रदायों की भी दाइयाँ थीं। चालीस दाइयों को भेजने की योजना बनाई गई थी, पर नाइटिंगेल बहुत प्रयत्न करके ३८ ही ऐसी योग्य दाइयाँ पा सकी जो इस कठिन और असुविधाओं का जीवन स्वीकार करने के लिये आगे आईं। पर 'धर्म' के नाम पर दुराग्रह करने वाले और अन्धविश्वासी लोगों को वास्तविक कार्य से क्या मतलब ? वे तो नाइटिंगेल पर आक्षेप लगाने लगे कि उसने अपने सम्प्रदाय का पक्षपात किया है। जब स्वयं महारानी विक्टोरिया ने 'नर्सों' की मुखिया को अपना आशीर्वाद दिया तब इस प्रकार के आक्षेपों अन्त हो सका।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस घटना को पढ़कर हमें अपने देश के वे दृश्य याद आ जाते हैं, जहाँ परोपकार और सेवा के कार्यों में पंडित लोग और 'विद्वान' कहलाने वाले धर्म शास्त्र के नियमों के नाम पर बाल की खाल निकालने लगते हैं। वे सेवा कार्य करने वाले को प्रोत्साहन और सहायता देने के बजाय उल्टी इस प्रकार की नुक्ताचीनी करते हैं, जिससे कार्य में बाधा पड़ती है। ऐसे लोग उद्देश्य की महानता की चिन्ता न करके अपने व्यक्तिगत महत्व और प्रतिष्ठा के अधिक अभिलाषी होते हैं, और उसी मनोवृत्ति से उत्तम पुण्य-कार्यों में भी रोड़ा अटकाने से बाज नहीं आते।

कुछ सरकारी अफसरों ने भी इस योजना पर यह आक्षेप किया कि जो कार्य मुख्यतः पुरुषों का था, उसकी जिम्मेदारी एक स्त्री को क्यों दी गई? उस समय तक इंगलैंड में भी सार्वजनिक कार्यों और खास कर युद्ध सम्बन्धी कार्यों में स्त्रियों का प्रवेश नहीं हुआ था और इस कार्य का भार उठाने के लिये बड़े साहस की आवश्यकता थी। पर जब फ्लोरेंस को महारानी का प्रोत्साहन वाला संदेश मिल गया तो उसने ऐसे स्वयंभू आलोचकों की कुछ परवाह न की और दृढ़तापूर्वक कर्म-क्षेत्र में पहुँच कर कर्तव्य-पालन में प्रवृत्त हो गई।

घायलों की स्थिति में सुधार—

जब फ्लोरेंस अपने नर्स-दल के साथ 'स्कूटारी' पहुँची तो उसे अस्पताल के लिये तुरकों की लम्बी-चौड़ी बारकें दे दी गईं। यहाँ पर चार अस्पताल थे, जिनमें से एक पहले का बना 'जनरल हास्पिटल' था। इसकी दशा कुछ अच्छी थी और उसमें घायलों तथा रोगियों की संख्या लगभग एक हजार थी। दूसरा यही बारकों वाला अस्पताल था। इनके अतिरिक्त दो और थे। जिस समय फ्लोरेंस वहाँ पहुँची उस समय इनका क्या दशा थी इस सम्बन्ध में कहा गया था—

"ये सब अस्पताल असाधारणरूप से अस्वास्थ्यकर तथा गन्दे थे और उनमें रोगियों का बुरी तरह जमघट था। जो जहाज क्रीमिया से रोगियों और घायलों को वहाँ लाते थे, उनमें चिकित्सा तथा सेवा सुश्रूषा की कोई व्यवस्था न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

थी। बालक्लेवा के युद्ध क्षेत्र से स्कूटारी तक आने में जहाजों को ८।। दिन लगते थे। अव्यवस्था के कारण हर जहाज में एक हजार में से ७४ व्यक्ति रास्ते में ही मर जाते थे। रोगियों को जहाज से उतारने में भी बड़ा कष्ट होता था। जिन लोगों को चिकित्सा-शास्त्र का ज्ञान नहीं उन्होंने इन बारकों को ही अस्पताल के लिये यथेष्ट और पर्याप्त समझ लिया था। यहाँ तक कि वहां के प्रधान मेडिकल अफसर ने चूने से पुत जाने मात्र से उनको अस्पताल के योग्य बतला दिया, पर वास्तव में वे मकान 'रोग के घर थे। उनमें दुर्गन्ध के मारे रोगियों का नाक में दम था। वायु के आवागमन के लिए पर्याप्त मार्ग न था। मोरियों में इतना कीचड़ और कूड़ा-कर्कट भरा था कि पानी बीच में ही रुका सड़ा करता था। एक रोगी को जितना स्थान मिलना चाहिये उससे एक चौथाई ही मिलता था।"

इन दूषित परिस्थितियों के सम्बन्ध में मिस फ्लोरेंस ने कई वर्ष बाद रायल कमीशन के सामने गवाही देते हुये कहा था—रात्रि में बारक के अस्पतालों की जो दुर्दशा रहती थी उसका वर्णन करना असम्भव है। मैं ने यूरोप के अनेक बड़े-बड़े नगरों में गन्दे और भ्रष्ट मकान देखे हैं, पर इतना बुरा कोई नहीं देखा, जिसकी इस अस्पताल से तुलना की जा सके। रोगियों के लिये जिन वस्तुओं की आवश्यकता थी, उन सब की वहाँ कमी थी। चारपाइयाँ और साधारण व्यवहार के बर्तन तक नहीं थे। पट्टी बाँधने का कपड़ा इतना मोटा और खुरदरा था कि उसकी पट्टी बँधवाने की अपेक्षा घायल कम्बलों में लिपटे रहना ही अधिक अच्छा समझते थे। वहाँ सोने के लिये कोई प्रथक कमरा नहीं था और न किसी प्रकार का सामान (फर्नीचर) ही था। प्रकाश के लिये बोतलों में लगाई गई बत्तियाँ ही टिमटिमाया करती थी और आवश्यकता पड़ने पर चीर-फाड़ के औजारों के लिये बगलें झाँकनी पड़ती थी। ऐसी हालत में भला उन रोगियों की दीन-हीन दशापर क्या प्रभाव पड़ सकता था जो घायल होकर या सरदी खाकर अथवा दस्त आदि की बीमारी के कारण इतनी लम्बी कष्टप्रद समुद्र यात्रा के पश्चात आरोग्य लाभ करने के लिये वहाँ आते थे।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपार कार्य-भार और सहनशीलता—

जैसा ऊपर कहा गया है, सेना विभाग के कितने अधिकारी स्त्री होने के कारण फ्लोरेंस को उपेक्षा की निगाह से देखते थे और उसकी आज्ञानुसार कार्य करना अपनी तौहीन समझते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि उसे आरम्भ में बड़ा परिश्रम करना पड़ा, जिसकी एक सम्पन्न घराने की सुकुमार महिला से कभी आशा नहीं की जा सकती थी। इसका वर्णन करते हुये एक लेखक ने उसके अपूर्व गुणों के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा रही उससे हमारे अनेक पुरुष भाई की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं,

जब फ्लोरेंस को यह मालुम हुआ की अधिकारी वर्ग उसकी व्यवस्थाओं में सचालन के सहायक न होंगे तो इस वीराङ्गना ने प्रतिदिन बीस घण्टे तक काम किया, जिसमें उसे रसोइये, गृह प्रबन्धक, मेहतर ,धोबी, गोदाम रक्षक और सामान ढोने वाला आदि सब के कर्तव्य अकेले को पूरा करना पड़ा। उसने अपना यह नियम बना लिया था कि चाहे रात को कितनी ही देर क्यों न हो गई हो, या सुबह अँधेरा ही हो तो भी अपना दफ्तर का सब काम समाप्त करके विश्राम ग्रहण करने से पूर्व अपने अस्पताल का अंतिम दौरा कर आती थी। लम्बी, दुबली-पतली आकृति, काला ऊनी वस्त्र पहिने, भूरे बालों पर सफेद टोपी लगाये, हाथ में लैम्प लिये हुये वह रोगियों के बिस्तरों की कतारों के बीच में से हर रास्ते से होकर जाती और बीमार लोगों को सान्त्वना देती फिरती। इस लिये सिपाहियों में उसका नाम 'लैम्प वाली महिला' पड़ गया और इसी नाम से वह अमर हो गई।"

जैसाकि सरकारी कामों में प्रायः देखा जाता है, सब सामग्री होने पर भी कर्मचारियों की लापरवाही और विभिन्न स्थानों में लिखा पढ़ी में देर कर देने से उसका उचित उपयोग नहीं होता। पुरुष कर्मचारी प्रायः परिस्थिति और किसी के सुख-दुःख पर खयाल न करके 'लिखित नियमों' का पालन करना ही अपना कर्तव्य समझते हैं, चाहे ऐसा करने से वह सामग्री और उद्देश्य दोनों ही क्यों न नष्ट हो जाय। पर फ्लोरेंस का मार्ग ही दूसरा था। वह किसी भी प्रकार जरूरतमन्दों के कष्टों को मिटाना चाहती थी, चाहे इसके लिये उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किसी प्रकार के 'कानूनी एतराज' या ऊँचे अफसरों के विरोध का सामना ही क्यों न करना पड़े। 'स्कूटारी' में अस्पताल की व्यवस्था करते हुये उसने इस प्रकार की समस्याएँ किस प्रकार सुलझाईं इसके दो-एक उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

एक बार मकान बनवाने का कार्य उसने अपने जिम्मे लिया। अस्पताल में कुछ कोठरियाँ ऐसी बेढंगी बनी थीं कि उनमें रोगियों को लेजाने में बड़ी अड़चन पड़ती थी। उधर सेना के कमाण्डर ने आज्ञादी कि बहुत से नये रोगी तथा घायल शीघ्र ही अस्पताल में भेजे जायँ। परन्तु वहाँ जगह की कमी पहले से ही बहुत थी। जो मकान अभी खाली पड़े थे वे मरम्मत करके उन रोगियों के रहने लायक बनाये जा सकते थे। इस कार्य के लिये एक बड़ी रकम की आवश्यकता थी, जिसेऔर कोई उच्च सैनिक अधिकारियों के अतिरिक्त मंजूर नहीं कर सकता था, मिस फ्लोरेंस ने इस विषय में सबसे पहले प्रयत्न आरम्भ किया। उन्होंने अस्पताल के प्रधान अधिकारी डॉक्टर ग्रेगरी की अनुमति लेकर मकान सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये लेडी स्टेट फोर्ड को लिखा। उन्होंने कार्य की आवश्यकता को ध्यान में रख कर प्रार्थना स्वीकार करली और उसे पूरा करने के लिये अपने चीफ इंजीनियर मि० गौर्डन को नियुक्त कर दिया।

मकान बनाने का कार्य १२५ मजदूरों से आरम्भ किया गया। पर पीछे मजदूरों की संख्या थोड़ी देख कर फ्लोरेंस ने २०० मजदूर अपने अधिकार से बढ़ा दिये, जिससे कार्य बहुत जल्दी समाप्त हो गया। अब अनुमतिदाता लेडी स्टेटफोर्ड ने तो अपना उत्तरदायित्व पहले के १२५ मजदूरों तक ही स्वीकार किया और शेष दो सौ के वेतन की जिम्मेदारी फ्लोरेंस पर छोड़ दी, जिसको बाध्य होकर उसे अपने पास से चुकाना पड़ा। पर जब युद्ध विभाग के सर्वोच्च अधिकारियों को इसका पता लगा तो उन्होंने फ्लोरेंस के कार्य को उचित स्वीकार करते हुये उस बिल का रुपया वापस कर दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक और घटनाका वर्णन करते हुये बताया गया है कि इंगलैंड से २७ हजार कमीजों का एक चालान आया। मरीजोंको उसकी तत्काल ही आवश्यकता थी, पर नियमानुसार उसे खोलने के लिये 'बोर्ड आफ सर्वे' की रिपोर्ट की प्रतीक्षा करनी थी। मिस फ्लोरेंस ने अपनी जिम्मेदारी पर बंडलों को खुलवा डाला और कमीजें रोगियों को दिलवादीं। इसी प्रकार फर्श को रगड कर साफ करवाने के लिये कड़े ब्रुशों और बोरों कि आवश्यकता हुई। यदि इन वस्तुओं के लिये सेना के 'परवेअर जनरल' (सामग्री जुटाने वाला अफसर) को लिखा जाता तो हफ्तों की देर लग जाती। अतः उसने 'टाइम्स' अखवार द्वारा प्रदत्त सहायता का उपयोग करके उसी समय काम पूरा करा दिया।

रोगियों के कपड़े धोने का ठेका एक ठेकेदार को दे रखा था। वह फ्लोरेंस के आने से पूर्व महीने भर में ५—६ कमीजें धोकर अपना कर्तव्य पूरा कर देता था। जिस अस्पताल में रोगियों की संख्या सैकडों तक हो, बहुत से लोग जहाँ विशूचिका, सड़न और अन्य संक्रामक रोगों से पीड़ित हों वहाँ महीने भरमें ६ कमीजों की धुलाई—यह कैसे आश्चर्य की बात है! फ्लोरेंस से यह दुर्दशा न देखी गई। उसने एक मकान लेकर उसमें कपडा धोने की भट्टी बनवादी और सिपाहियों की स्त्रियों को वहाँ कपड़ा धोने पर नियुक्त कर दिया। यह कार्य भी उसने 'टाइम्स' के कोष से प्राप्त होने वाली सहायता से पूरा किया। इतना ही नहीं वह अपना ७५०० रु० वार्षिक वेतन भी रोगियों की परिचर्या में ही व्यय कर देती थी।"

युद्ध स्थल में सिपाहियों के लिये शराव पीना आज कल भी बहुत प्रचलित है। उस समय तो इसे एक मनोरंजन के रूप में भी समझा जाता था और सिपाही अपने वेतन का एक बड़ा भाग इस दुर्व्यसन में व्यय कर डालते थे। जो धन उनके स्त्री-बच्चों के पालन-पोषण में खर्च किया जाना चाहिये था। वह शराब खोरी जैसे जघन्य और हानिकारक कार्य में खर्च कर दिया जाता था। मिस फ्लोरेंस नाइटिंगेल का विश्वास था कि जो लोग देश के गौरव की रक्षार्थ प्राण उत्सर्ग कर रहे हैं, वे युद्ध समाप्त होने पर अवश्य उन्नति कर सकेंगे। इस उद्देश्य से उसने सिपाहियों के मनोरंजन के लिये वहाँ एक वाचनालय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तथा काफी की दुकान खुलवादी। उसने एक मनीआर्डर आफिस भी स्थापित करा दिया जिसके द्वारा सिपहियों को अपना वेतन अपने परिवारों के पास भेजने की सुविधा हो गई। इस प्रकार ६ मास में ही सिपाहियों के घरों को १० लाख ६५ हजार रु० भेजे जा सके यह देख कर वे सब मुक्त कण्ठ से फ्लोरेंस की प्रशंसा करने लगे। उसमेंसे एक ने अस्पताल का वर्णन करते हुये लिखा था—'फ्लोरेंस के आगमन के पूर्व यहाँ बहुत अधिक दुराचार फैला था। परन्तु अब यह स्थान एक गिर्जा के समान पवित्र प्रतीत होता है।' फ्लोरेंस सिपाहियों को धार्मिक ईसाई समझकर व्यवहार करती थी। वे लोग भी उसे 'धर्म की देवी' की तरह मानते थे।

जब उसने ब्रिटिश सैनिकों की अन्य सामान्य आवश्यकताओं की व्यवस्था करना प्रारम्भ किया तो अनेक लोगों ने उसकी खिल्ली उड़ाई। तो भी उसने रोगमुक्त सिपहियों के लिये खेल, मनोरंजन की सामग्री और भोजनालय की व्यवस्था की। उस समय तो लोगों ने इन सुधारों का पूरा मूल्य नहीं समझा पर आज ये सब बातें सैनिक व्यवस्था का अनिवार्य अंग हो गई हैं। उस समय जितने अस्पताल फ्लोरेंस की देख रेख में थे, वे सब भी एक नवीन रूप धारण करने लगे थे।

एक बार वह युद्ध के मोर्चे पर गई और उसने अनुभव किया कि सैनिकों की कार्यक्षमता के लिये ताजा भोजन और अन्य सुविधाऐं भी वैसी ही आवश्यक है, जैसी कि गोली बारूद आदि। जिन स्थानों में घमासान लड़ाई हो रही थी उन स्थानों के उसने तीन बार दौरे किये और हर बार कुछ न कुछ सुधार किया। पर वहाँ भी ईर्ष्यालु पुरुष डाक्टरों तथा अन्य कुछ अधिकारियों ने उसका विरोध किया और उसके काममें तरह-तरह से बाधाएँ डालीं। अगर उसके पास खर्च के लिये निजी कोष न होता तो उसे अपनी सहकारी नर्सों सहित बहुत दुःख भोगना पड़ता, क्यों कि उसके पास बड़े विलम्ब से रसद पहुँचायी जाती थी। यद्यपि वह युद्ध विभाग की आज्ञानुसार युद्ध क्षेत्र में गई थी, पर दस दिन तक किसीने उस बिचारी की बात तक नहीं पूछी।

युद्ध क्षेत्र में दूषित जल-वायु और उस प्रदेश के प्रतिकूल वातावरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में रहने से फ्लोरेंस पर भी उसी ज्वर का आक्रमण हो गया जिससे अन्य हजारों सिपाही पीड़ित हुये थे और फ्लोरेंस ने ही देखभाल सेवा सुश्रूषा करके जिनकी प्राण रक्षा की थी। ज्वर का आक्रमण ऐसा तीव्र था कि कुछ समय तक उसके जीवन की आशा ही जाती रही। वह किसी प्रकार बच तो गई पर उसके सुन्दर केश नष्ट हो गये और उसका स्वास्थ्य इतना गिर गया की वह फिर कभी अपने सौन्दर्य को प्राप्त न कर सकी।

शायद कुछ पाठक इस बात के महत्व को साधारण ही समझें, पर उनको जानना चाहिये कि प्रायः सभी महिलायें सब से ज्यादा चिन्ता अपने सौन्दर्य की ही करती हैं, और युरोपियन स्त्रियाँ तो इसके लिये कितने ही खर्च और परिश्रम की भी चिन्ता नहीं करती। आजकल तो वहाँ ऐसी सौन्दर्य प्रेमी स्त्रियों की भी कमी नहीं, जो अपने केश, आँख, नाक, दाँत अदि का बीमा लाखों रुपये का करानी हैं, कि इनकी सुन्दरता को किसी प्रकार क्षति न पहुँचे। ऐसी दशा में फ्लोरेंस का सेवा-धर्म के लिये सौन्दर्य का भी बलिदान कर देना साधारण बात नहीं थी।

और समझने वालों ने उस समय भी इसके महत्व को स्वीकार किया। ब्रिटिश साम्राज्य की साम्राज्ञी महारानी विक्टोरिया ने फ्लोरेंस को स्वयं लिख कर एक पत्र भेजा जिसमें कहा था—मुझे उस समय बड़ा संतोष होगा जब तुम अपने देश में लौट आओगी। तुम्हारी मित्रता प्राप्त करके मुझे अत्यन्त हर्ष होगा, क्यों कि तुमने स्त्री जाति के लिये एक उज्ज्वल उदाहरण उपस्थित किया है। मैं अपनी प्रत्येक प्रार्थना में तुम्हारे स्वास्थ्य की रक्षा को स्थान देती हूँ। तुम सदा मुझे अपना शुभाकांक्षी समझो।"

इस प्रकार फ्लोरेंस की सच्ची सेवा भावना और निस्स्वार्थता का यह परिणाम हुआ कि उसका नाम देश-विदेशोंमें प्रसिद्ध होगया। आरम्भ में जो व्यक्ति उसपर आक्षेप करते थे, उसके त्याग और बलिदान को देख कर उन सब का मुँह बन्द हो गया और वे भी उसकी प्रशंसा करने को बाध्य हो गये। रह गये फौजी अफसर जो स्वार्थवश अथवा अपने अधिकारों में हस्तक्षेप होता समझ कर उसकी योजनाओं का विरोध करते थे, उनको अन्त में चुप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहजाना पड़ा, क्योंकि फ्लोरेंस कि सुव्यवस्था और सुधारों के फलस्वरूप घायल होकर अस्पतालों में आनेवाले सिपाहियों में से जहाँ पहले १०० में से ४२ की मृत्यु हो जाती थी, वहाँ अब २२ ही मरते थे। इस प्रत्यक्ष प्रमाण ने फ्लोरेंस के कार्य की उपयोगिता और श्रेष्ठता सब पर प्रकट करदी और किसी को नुक्ताचीनी करने की गुंजायश न रही।

यद्यपि बीमारी के फल से फ्लोरेंस बहुत निर्बल हो गई थी और उसका स्वास्थ्य बहुत समय तक नहीं सँभला, तो भी अपने मित्रों तथा परिवार वालों के लगातार आग्रह को अस्वीकार करके वह उस समय तक क्रीमिया में ठहरी रही जब तक तमाम अंग्रेजी सेना इंगलैण्ड वापस न लौट गई। जब वह अपने देश को वापस आई तो जनता ने उस के स्वागत की बड़ी तैयारियाँ कीं, पर उसने इसके लिये इनकार कर दिया और एक दिन चुपचाप स्टेशन पर उतर कर पैदल ही अपने घर पहुँच गई।

किन्तु शीघ्र ही महारानी विक्टोरिया ने स्वयं 'बाल मोरल' नामक स्थान में उसका स्वागत किया और उसके कार्य की सराहना की। उसकी सेवाओं के उपलक्ष में जनता ने ५० हजार पौंड (७॥ लाख रुपया) का चन्दा एकत्रित किया। पर उसने अपनी सेवा के लिये इस प्रकार का कोई धन लेना स्वीकार न किया। तब उसके मित्रों ने उस धनराशि से सेण्ट टामस अस्पताल' में "नाईटिंगेल ट्रेनिङ्ग स्कूल फार नर्सिङ्ग" (नाईटिंगेल धातृ शिक्षणालय) की स्थापना कर दी, जिसमें उपयुक्त नारियों को इस कार्य की उत्कृष्ट शिक्षा देने की व्यवस्था की गई थी। निस्सन्देह इस योजना से नाईटिंगेल को हार्दिक सन्तोष हुआ, क्योंकि वह नर्सिङ्ग (धातृ कला) को केवल एक पेशे का साधन ही नहीं मानती थी, वरन् चाहती थी कि नर्से रोगियों की सेवा को एक धर्म-कार्य समझ कर भी करें। जिन नर्सों ने उसके साथ क्रीमिया में काम किया था उनमें से कुछ के सम्बन्ध में उसने एक जगह लिखा है।

"वे उत्कृष्ट एवं पवित्र तथा निस्वार्थ भावसे काम करने वाली हैं। वे सदैव रोगियों को शान्ति और सान्त्वना देने के लिये कार्य करती रहती थीं"।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

फिर भी नाइटिंगेल ने अनुभव किया कि बिना उपयुक्त शिक्षा (ट्रेनिङ्ग) के ऐसी सहृदय नर्सें भी चिकित्सा और सफाई का कार्य जैसा चाहिये वैसा नहीं कर सकतीं। 'सेण्ट टामस' वाले स्कूल में इन दोनों बातों पर लक्ष्य रखा गया था। यद्यपि नाइटिंगेल अन्य कार्यों की अधिकता के कारण उसमें स्वयं शिक्षा देने में कोई भाग न ले सकी, तो भी वह उस संस्था में शिक्षा पाने वाली नर्सों के काम में 'ट्रेनिङ्ग' लेते समय तथा वहाँ से कार्य क्षेत्र में चले जाने पर भी गहरी दिलचस्पी लेती थी। उसने 'धातृ-विद्या' पर कई उत्तम पुस्तकें भी लिखीं जिनके द्वारा इस धन्धे को करने वाली महिलायें अपनी यथेष्ट ज्ञान-वृद्धि कर सकती हैं। इन पुस्तकों में से 'नोट्स ऑन नर्सिङ्ग (धात्री-विद्या के सम्बन्ध में चुनी हुई बातें) अभी तक इस विषय की एक श्रेष्ठ पुस्तक मानी जाती है।

उसकी संस्था में शिक्षा पाकर अनेक महिलाओं ने वैसी संस्थाऐं अन्य स्थानों पर खोलीं और इस प्रकार 'नर्सिङ्ग' का धन्धा नये और लोकहितकारी रूप में इंगलैण्ड ही नहीं योरोप के सभी देशों में फैल गया। यद्यपि 'नाइटिंगेल धातृ शिक्षणालय' का पाठ्यक्रम केवल एक वर्ष का था, पर उसमें छात्राओं की ज्ञान-वृद्धि तथा आचार-शुद्धि दोनों बातों की तरफ भरपूर ध्यान दिया जाता था। नाइटिंगेल इस विषय में प्रत्येक नर्स से सम्बन्ध बनाये रहती थी और जब वे स्कूल की पढ़ाई समाप्त करके नौकरी पर चली जाती थीं तब भी उनसे पत्र व्यवहार करती रहती थी।

इस प्रकार उसने इस पेशे को, जो थोड़े ही वर्ष पूर्व हीनता और दुश्चरित्रता की निगाह से देखा जाता था, निरन्तर प्रयत्न करके सम्माननीय और समाज के लिये कल्याणकारी बना दिया। अब आवश्यकता पड़ने पर शाही और सरदारों (लार्ड्स) घरानों की महिलाऐं भी नर्सों का काला लबादा और सफेद टोपी पहिन कर रोगियों की सेवा करने में संकोच नहीं करती। अवश्य ही वे इस कार्य को देश की रक्षा और मानवता की दृष्टि से करती हैं और इसके लिये किसी प्रकार का वेतन नहीं लेतीं। पर इससे नर्स के पेशे का सम्मान इतना बढ़ जाता है कि सब देशों के निवासी युद्ध और शान्ति, प्रत्येक स्थिति में उनकी मान-मर्यादा की रक्षा का पूरा ध्यान रखते हैं। सन् १९१५ में जब जर्मनी का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

फ्रांस और इंगलैण्ड से युद्ध हो रहा था, बेलजियम की राजधानी ब्रुसेल्स में एडिथ कैवेल नामक 'नर्स' को जर्मन सैनिक अधिकारियों ने, कैदी अंग्रेज सिपाहियों को छिपा कर भगाने के अभियोग में गिरफ्तार किया। नर्स कैवेल ने अपना 'अपराध' स्वीकार किया और उसे गोली से उड़ा दिया गया। एक सेवा कार्यरत स्त्री और वह भी 'नर्स' का पवित्र पेशा करने वाली की, हत्या से संसार भर में हलचल मच गई और कुछ समय बाद अमरीका ने जर्मनी के विरुद्ध जो युद्ध घोषणा की उसका एक कारण नर्स कैवेल की 'हत्या' भी थी।

जिस समय नाइटिंगेल क्रीमिया से वापस आई उसका स्वास्थ्य ठीक न था। दो वर्ष तक हजारों सिपाहियों की प्राण-रक्षा के लिये कठोर परिश्रम करने और अन्त में ज्वर के भीषण आक्रमण से उसकी निर्बलता बहुत बढ़ गई थी। इसलिये उसके सभी शुभचिन्तक यह सम्मति दे रहे थे कि अब कुछ महीनों तक वह पूर्ण विश्राम करके अपने स्वास्थ्य को ठीक कर ले। पर नाइटिंगेल के मन में विचार उठ रहा था कि उसका असली काम तो अब आरम्भ हुआ है। क्रीमिया के युद्ध से पहले तो उसे पता ही न था कि अस्पतालों की इतनी दुर्दशा है। यह तो ठीक है कि युद्ध-क्षेत्र में जाने पर अनेक सैनिकों को मरना ही पड़ता है, पर जो घायल बच सकते हैं उनको समय पर चिकित्सा, सेवा और स्वच्छता की कमी से मरने देना एक अन्याय अथवा दण्डनीय लापरवाही की बात है।

सैनिक चिकित्सा विभाग की यही त्रुटि उसे बराबर खटकती रहती थी और इस सम्बन्ध में अधिक से अधिक सुधार कराने के लिये उसने इंगलैण्ड लौटते ही प्रयत्न करना आरम्भ कर दिया। वह समझती थी कि अभी तो मामला गर्म है, जनता को युद्ध-क्षेत्र में सिपाहियों के कष्ट सहन की बात याद है, यदि इसी समय सैनिक-चिकित्सा विभाग में सुधार करने का प्रस्ताव और कार्यक्रम जनता के सामने पेश किया जायगा तो उसका सुपरिणाम निकल सकता है।

उसने समस्त सैनिक कागज-पत्रों तथा रिपोर्टों की जाँच करके सन् १८५८ में ही ८०० पन्नों की एक रिपोर्ट छपाकर प्रकाशित की जिसमें अंग्रेजी सेना के अस्पतालों के प्रबन्ध, उनकी सुव्यवस्था और सैनिकों के स्वास्थ्य पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रभाव डालने वाली अनेक बातों के सम्बन्ध में विचार प्रकट किये गये थे। इस रिपोर्ट का जनता पर इतना प्रभाव हुआ कि सरकार को उसकी इच्छा-पूर्ति के लिये उसी समय एक रायल कमीशन नियत करना पड़ा, जिसने सबसे अधिक सहायता नाइटिंगेल की रिपोर्ट से ही ली। उस कमीशन के सामने नाइटिंगेल ने जो गवाही दी वह भी बहुत महत्त्वपूर्ण थी। कहना न होगा कि 'रायल कमीशन' ने नाइटिंगेल के अधिकांश सुझावों का समर्थन किया और कुछ समय बाद वे सब सुधार कार्य रूप में परिणित हो गये। महारानी विक्टोरिया तो उसके सेवा-कार्य से इतनी प्रसन्न थीं कि उन्होंने उसे सचमुच अपनी सखी बना लिया। महारानी की मित्रता भी उसके प्रभाव को बढ़ाने वाली सिद्ध हुई और इसका उपयोग भी उसने 'नर्सिङ्ग' की वृद्धि और प्रचार करने के लिये ही किया।

परोपकार की भावना की शक्ति कितनी अधिक है और अन्त में वह किस प्रकार सफलता प्राप्त करती है, नाइटिंगेल का जीवन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। इसका ध्यान करके हमको अपने उन देशवासियों पर तरस आता है जिनके मुँह से सदा यही निकलता है—'अजी यह संसार बड़ा खराब है। यहाँ 'होम करते हाथ जलता है।' 'जिनके साथ भलाई करो वही उल्टा बुराई करने को तैयार होता है।' हम के लोग पहले तो बिना किसी प्रकार के अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष लाभ की आशा के किसी सार्वजनिक काम में हाथ ही नहीं डालते, और यदि कभी कुछ करने को तैयार भी होते हैं, तो फूँक-फूँक कर कदम रखते हैं और जरा-सा भी विरोध, कठिनाई या हानि की संभावना सामने आते ही भाग खड़े होते हैं। दरअसल हम कोई भी सार्वजनिक काम समाज का एक सदस्य होने के नाते अपना कर्तव्य समझकर नहीं करते, वरन् या तो किसी प्रकार के दबाव से करते हैं या भविष्य में धन अथवा यश प्राप्ति की भावना से करते हैं। इस लिये ज्योंही परिस्थिति तनिक बदलती है, लोगों को अपने उद्देश्यों की पूर्ति में निराशा नजर आती है, त्योंही वे समस्त दोष का भार दूसरों पर डालकर अलग जा खड़े होते हैं।

ऐसे लोगों को नाइटिंगेल के चरित्र से अवश्य कुछ शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। उसने जो कुछ किया स्वेच्छा से, बिना किसी प्रकार के दबाव या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आग्रह के किया । हमारे बन्धुगण तो इष्ट-मित्रों के आग्रह और बुजर्गों के आदेश से भी किसी ऐसे काम के लिये प्रस्तुत नहीं होते, जिसमें कष्ट-सहन की संभावना हो या किसी प्रकार की हानि होती जान पड़े । पर नाइटिंगेल ने इष्ट-मित्रों के लगातार मना करने और घर वालों के विरोध करते रहने पर भी ऐसा मार्ग ग्रहण किया जिसमें कष्टों और खतरों के सिवा किसी सांसारिक लाभ की तनिक भी आशा न थी । उसके विरोधियों ने उस पर मनमाने ढंग से काम करने का दोष तो लगाया, पर यह आक्षेप किसी ने नहीं किया कि उसने इस काम में कुछ कमाई कर ली है या कोई जमीन-जायदाद प्राप्त करली है । कोई करता भी कैसे वह तो आवश्यकता पड़ जाने पर उल्टा अपनी गाँठ का रुपया भी सरकारी सिपाहियों की सुख-सुविधा के लिये खर्च कर डालती थी । उसे इस काम में केवल एक ही सुख मिलता था कि यह उसकी अन्तरात्मा के अनुकूल था । अपनी अन्तिम आयु में उसने अपनी डायरी में एक जगह लिखा था—"हे प्रभु ! आपने मेरा हृदय दीन-दुःखियों के दुःखों को दूर करने के लिये प्रेरित किया है, उसे मैं आपकी सेवा में समर्पित करती हूँ । आप जो सेवा चाहें उससे लीजिये ।"

लार्ड स्टेनली ने 'लैम्पवाली लेडी' की प्रशंसा करते हुये लिखा है—'मिस नाइटिंगेल के अतिरिक्त मैं और किसी व्यक्ति को नहीं जानता जिसने इंगलैण्ड या योरोप के अन्य देशों में पिछले सौ वर्षों में स्वेच्छा से आने वाले खतरों का मुकाबिला किया हो और जिसने अरुचिकर पदों को स्वीकार करके एक महान और उपयुक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये इतना कार्य किया हो ।'

वास्तव में हम मुँह से 'धर्म-धर्म' कहते हुये भी वास्तविक धर्म को भूल गये हैं । हमें आश्चर्य है कि उपनिषद्, गीता और वेदान्त जैसे सिद्धान्तों के अनुयायी कहलाने वाले इतने स्वार्थ-परायण कैसे हो गये कि वह 'धर्म' में भी—'ईश्वर के भजन' में भी—किसी देवता की उपासना में भी सबसे पहले स्वार्थ को, किसी प्रकार के व्यक्तिगत लाभ को सामने रखते हैं । मनुष्यता के नाते भी उनका कुछ कर्तव्य है, समाज के एक सदस्य की हैसियत से भी उनको किसी के साथ कुछ भलाई करनी चाहिये, यह उनकी समझ में नहीं आता । वे मंदिर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में दर्शन करने जाते हैं तो पहले यह ख्याल कर लेते हैं कि इससे हमारी मनोकामनाएँ पूरी होंगी। यदि वे किसी को थोड़ा बहुत दान देते हैं तो आशा करते हैं कि इसके बदले हमको स्वर्ग की प्राप्ति होगी ! अगर वे किसी सेवाकार्य में भाग लेते हैं, तो पहले यह सोच लेते हैं कि इससे हमारा यश और प्रभाव बढ़ेगा !

एक आध्यात्मिकता और आत्मज्ञान का दावा करने वाली जाति के लिये निस्सन्देह यह बड़ी लज्जा और कलंक की बात है। क्या हम आशा करें कि वे नाईटिंगेल जैसी एक विदेशी स्त्री की सच्ची धार्मिकता और हार्दिक 'ईश्वर-परायणता' के मर्म को समझकर धर्म के सच्चे मार्ग को जानेंगे और निस्वार्थ सेवा के मार्ग पर कदम बढ़ायेंगे।

भारत सम्बन्धी कार्य—

क्रीमिया युद्ध की समाप्ति के एक वर्ष बाद ही भारत में गदर छिड़ गया। नाईटिंगेल की इच्छा हुई कि वह यहाँ आकर भी अपना सेवा-कार्य जारी करे, पर एक तो उस समय वह काफी अशक्त हो गई थी और दूसरे उसे सन्देह था कि इतने दूरवर्ती और सर्वथा अपरिचित देश में जाकर मैं कोई उपयोगी कार्य कर भी सकूँगी या नहीं ? आरम्भ में तो उसे यहाँ आने का विचार गोरे सिपाहियों की चिकित्सा और स्वास्थ्य-सुधार के लिये ही उत्पन्न हुआ था, परन्तु पीछे उसका दृष्टिकोण काफी विस्तृत हो गया और वह अस्वास्थ्यकर दशा में पड़े हुये लाखों-करोड़ों भारतवासियों की अवस्था और उसके सुधार के उपायों का बड़े ध्यान से अध्ययन करने लगी। उसने सोचा कि इस शिक्षा-प्रचार के विचार-प्रधान युग में यह कोई आवश्यक नहीं कि हम मौके पर जाकर ही लोगों की सेवा करें। दूर रहकर भी हम उनकी अवस्था का पता लगा सकते हैं और लिखा-पढ़ी के द्वारा उनके हित की बातों में सहायक बन सकते हैं। इस लिये उसने भारत सरकार द्वारा प्रकाशित विभिन्न विषयों की रिपोर्टों का अध्ययन करना आरम्भ किया और भारतवर्ष से सम्बन्ध रखने वाले देशी-विदेशी मुख्य व्यक्तियों से मिलकर बातचीत और पत्र व्यवहार करने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ ही समय में उसने इस विषय में काफी अभिज्ञता प्राप्त कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ली । भारत की स्वास्थ्य-सम्बन्धी समस्याओं पर उनकी सम्मति बड़ी तथ्यपूर्ण मानी जाने लगी । उसकी चेष्टा से भारतवर्ष की स्वास्थ्य सम्बन्धी अवस्था की जाँच करने के लिये एक 'सैनेटरी रायल कमीशन' (स्वच्छता सम्बन्धी आयोग) नियुक्त किया गया, जिसने तीन-चार वर्ष तक पूरी छान बीन करके इस संबन्ध में २०२८ पृष्ठ की एक रिपोर्ट तैयार की । इसमें एक स्थान पर उन उत्तरों को भी प्रकाशित किया गया है जो भारतवर्ष के सैनिक अधिकारियों को भेजे गये प्रश्नों के सम्बन्ध में प्राप्त हुये थे । इस विषय में जब नाइटिंगेल की सम्मति माँगी गई तो उसने २३ पृष्ठों में अपने विचार लिखकर दिये । उसनेब ताया कि 'सेना में जो रोग फैले हुये हैं उनका मुख्य कारण सैनिक-छावनियों के लिये अस्वास्थ्यकर स्थानों का निर्वाचन करना है । दूषित जल, गन्दी नालियाँ, दुर्गन्ध-युक्त बाजार, वायु के आवागमन में रुकावट, थोड़ी-सी जमीन पर अनेक बारकें, तथा रोगियों की घरों की अनुपयुक्त बनावट आदि अनेक बातें भी रोगों के फैलने में सहायक बनती हैं । मदिरा-पान की बुराई भी कम हानिकारक नहीं है । सिपाहियों को जैसी सुविधाऐं मदिरापान के लिये दी जाती हैं वैसी ही यदि नहाने-धोने के लिये होतीं तो भारतीय सेना स्वच्छता के विचार से संसार भर में अग्रसर रहती ।'

इस रिपोर्ट में भारतीय सेना को स्वास्थ्य-रक्षा के सम्बन्ध में जो सिफारिशें की गई हैं वे वास्तव में महत्त्वपूर्ण हैं, पर केवल रिपोर्ट में लिख देने से कोई योजना लाभदायक नहीं हो सकती । उसके लिये आवश्यकता है कि किसी सुयोग्य व्यक्ति को उसकी पूर्ति का भार दिया जाय । उस समय लार्ड लारेंस भारत के वायसराय होकर आ रहे थे । यह जानकर नाइटिंगेल उनसे मिली और भारतीय स्वास्थ्य-सुधार के सम्बन्ध काफी विचार विमर्श किया । नाइटिंगेल की बातों का लाट साहब पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने भारत वर्ष में आकर कुछ ही महीनों में 'सैनेटरी कमीशन' की सिफारिशों के अनुसार कार्य आरम्भ कर दिया । कमीशन के सदस्य सेनाके स्वास्थ्य-सुधार के सम्बन्ध में उपयोगी परामर्श देने लगे और सभी फौजी अस्पतालों और अन्य सैनिक-संस्थानों में स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सेवा-धर्म की सच्ची अनुरागिणी होने के कारण नाइटिंगेल मानव-जाति को एक परम-पिता की सन्तान और आपस में भाई-भाई समझती थी और अवसर मिलने पर केवल इंगलैण्ड ही नहीं, अन्य किसी भी देश के सम्बन्ध में स्वास्थ्य-सम्वर्धन की योजनाओं में सहयोग देने को तैयार रहती थी। यद्यपि क्रीमिया के युद्ध में कार्य करने के पश्चात् स्वास्थ्य के निर्बल हो जाने से दूर देशों की यात्रा और अधिक शारीरिक परिश्रम तो उसके लिये कठिन हो गया था, पर इस कमी को उसने अपने नियमित अध्ययन और पत्र-व्यवहार द्वारा पूरा कर लिया था। वह स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं पर सदैव विचार करती और संसारभर के विद्वानों के ग्रंथों और वार्तालाप द्वारा सदैव इस विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करती रहती थी।

इस प्रकार इस विषय में उसका ज्ञान इतना बढ़ गया था और उसकी सम्मति इतनी उपयोगी हो गई थी, कि अस्पतालों के निर्माण और उनकी सुव्यवस्था के सम्बन्ध में अनेक देशों के कार्यकर्त्ता और अधिकारी भी उससे परामर्श लेते थे। कई सम्राटों तक ने इस विषय में उसकी सम्मति ली और उसके आधार पर अपने यहाँ अनेक सुधार किये। वह भी इस सम्बन्ध में बड़ी तत्परता से काम लेती थी और बिना आलस्य अथवा प्रमाद के सब पत्रों का विस्तारपूर्वक उत्तर देती थी। सन् १८७० में जब फ्रांस और प्रुशिया (जर्मनी) का युद्ध छिड़ा तो दोनों ही पक्षों के प्रमुख सेनाध्यक्षों ने रोगी-सैनिकों की परिचर्या के विषय में उसकी सलाह ली और उसके आधार पर अपने घायलों की प्राण-रक्षा की व्यवस्था की। सेवा-धर्म वाले के लिये कोई भी शत्रु नहीं रहता। वह जीव-मात्र से मैत्री-भाव अनुभव करता है। उसको दृढ़ विश्वास रहता था कि वह जो कार्य कर रही है वह ईश्वर की प्रेरणा से और उन्हीं के आदेश के अनुकूल है। वह बाल्यावस्था से ही जिस 'ईश्वरीय-आज्ञा' की प्रतीक्षा करती रहती थी उसका आशय समाज-सेवा से ही था, क्योंकि ईश्वर की सेवा का एकमात्र मार्ग पीड़ित-मानवता और अन्य सभी प्राणियों के कष्टों को यथाशक्ति मिटाते रहने का प्रयत्न करना ही है।

इसी दृष्टिकोण से वह भारतवासियों के जीवन-सुधार की अनेक समस्याओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर गहरा अध्ययन और विचार करती रहती थी और उनके सम्बन्ध में योग्य अधिकारियों से वार्तालाप अथवा पत्र-व्यवहार करके अपने विचार को कार्यरूप में परिणित कराने का प्रयत्न किया करती थी। उसने भारतवर्ष के लिए स्वास्थ्य विषयक उपयोगी पुस्तकें तैयार कराके उनका प्रचार करने का सुझाव 'साहित्य-परिषद्' के अध्यक्ष डा० मरडक को दिया। उसने अपने एक पत्र में उनको लिखा—

"मुझे भारतवर्ष के सम्बन्ध में उपयुक्त पुस्तकें उपलब्ध करने में लगातार निराशा हो रही है। मुझे यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि 'लेडी डफरिन कमेटी', जिसका उद्देश्य भारत की रोगिणी और प्रसूता स्त्रियों की चिकित्सा और सेवा करने के कार्यक्रमों का प्रसार करना है, अँग्रेजी किताबों से काट-छाँटकर ही भारतवासियों के लिए पुस्तकें संकलित कर रही है। परन्तु मेरी सम्मति में भारतीय स्त्रियों तथा धायों (नर्सों) के लिए जो पुस्तकें लिखी जायें, उनके मूल लेखक वे लोग होने चाहिए जो भारतवर्ष में रहते हों अथवा वहाँ की स्त्रियों की प्रकृति तथा परम्पराओं से भलीभाँति परिचित हों।"

मिस फ्लोरेंस ने डा० मरडक को जो अनेक पत्र लिखे, उनमें केवल स्वास्थ्य विषयक पुस्तकों का ही जिक्र नहीं होता था। उसने भारतवर्ष में वनस्पतिशास्त्र और प्राणिशास्त्र सम्बन्धी पुस्तकों के प्रचार करने की भी सलाह दी थी। उसको पशुओं से भी बड़ा प्रेम था और इस सम्बन्ध में उसने एक पत्र में लिखा था—

"यह जानकर कि भारतवासी अपने पशुओं, खासकर घोड़ों के साथ बुरा व्यवहार और लापरवाही करते हैं, मेरे मन में यह विचार उठा कि घरेलू तथा कृषि-कार्य में काम आने वाले पशुओं के सम्बन्ध में एक छोटी पुस्तक लिख कर वहाँ प्रचारित की जाय। जब मैं अपने घर में कुर्सी पर बैठी हुई पार्कलेनमें घोड़ों को देखती हूँ तो मुझे प्रतीत होता है कि वे हमारी अपेक्षा अधिक उपयोगी हैं। किराये को गाड़ियों में जुते घोड़ों की टाँगों की उत्तमता और सुन्दरता को देखकर यह कहा जा सकता है कि वे बड़े आदमियों की सवारी के घोड़े थे, पर अब उनकी अवस्था में बड़ा अन्तर आ गया है। उनको हरी घास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से सज्जित मैदान में दौड़ने की अपेक्षा पक्की सड़क पर चलना पड़ता है। तो भी वे भरसक गाड़ियों को खींचने में लगे रहते हैं और इस प्रकार अन्त तक अपने कर्तव्य का पालन करते रहते हैं। मेरा विश्वास है कि ऐसे घोड़े अवश्य स्वर्ग को जायेंगे।"

एक अन्य पत्र में उसने लिखा कि—"एक भारतवासी का अपने ग्राम के साथ कैसा सम्बन्ध होना चाहिए, इस सम्बन्ध में भी एक पुस्तिका लिखी जानी आवश्यक है। मेरी समझ में भारत के प्रत्येक ग्राम में प्रजा सत्तात्मक प्रणाली से मिलती-जुलती पंचायतों का किसी रूप में अस्तित्व होने और गाँव के किसी निवासी ही का उनका मुखिया होने के कारण यह कठिन नहीं है कि इस प्रणाली को फिर से प्रचलित किया जाय। ऐसा करने से आरोग्यता और राज्य-सम्बन्धी नियमों के पालन कराने में इंगलैंड की अपेक्षा भारत में अधिक सुविधा हो जायगी।"

इस प्रकार जिस समय जो भी समस्या उसके सामने आई, उस पर उसने गम्भीरतापूर्वक विचार किया और उसे निवारण करने के उपायों पर अपनी सम्मति प्रकट की। सन् १८७७ में जब भारतवर्ष में घोर अकाल पड़ा तो उसका ध्यान यहाँ के 'जल-कष्ट' की तरफ आकर्षित हुआ। उस समय उसने अपने एक परिचित सज्जन को पत्र में लिखा—"मैं १८ वर्ष से भारतीय स्वास्थ्य-सुधार सम्बन्धी कार्य और प्रचार कर रही हूँ, परन्तु गत चार वर्षों से मेरे मन में एक नवीन भावना उत्पन्न हुई है—वह यह कि जब लोगों के जीवन ही भयानक सङ्कट में हैं, तब उनके लिये स्वास्थ्य विषयक प्रयत्नों से क्या लाभ? बेचारे भारतीय कृषक अतिवृष्टि, अनावृष्टि, जमींदार और ऋण देने वाले बौहरों के कारण बुरी तरह मर रहे हैं। यदि इन लोगों के लिए जल का प्रबन्ध कर दिया जाय, तो फिर उनकी रोटी की चिन्ता मिट जायगी।" और वह सचमुच भारतीय किसानों की आर्थिक दशा का ज्ञान प्राप्त करने में संलग्न हो गई और थोड़े ही समय में उनकी खेती, शिक्षा, लेन-देन सम्बन्धी बातों का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त करके उनके सुधार के सम्बन्ध में अधिकारियों से पत्र-व्यवहार करने लगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसके इन कार्यों को देखकर उसके एक मित्र उसे 'भारत के गवर्नर जनरलों' पर शासन करने वाली 'गवर्नरनी' कहा करते थे और उसकी वह 'उपाधि' एक प्रकार से ठीक भी थी। भारतवर्ष में ब्रिटिश सरकार द्वारा 'वायसराय' नियुक्त किये जाने की प्रथा सन् १८५७ के बाद ही उसके जीवन-काल में प्रचलित की गई, और तब से जितने भी वायसराय यहाँ आये वे प्रायः सभी इङ्गलैंड से चलने से पूर्व नाइटिंगेल से भेंट करके स्वास्थ्य-सुधार के मामलों पर उसकी सलाह अवश्य ले लिया करते थे। अन्य भारतीय अधिकारियों से भी, जो सभी उस समय इङ्गलैंड से ही आते थे, वह इस सम्बन्ध में चर्चा करती रहती थी। यद्यपि उस समय वह यह नहीं जानती थी कि भारत की राजनीतिक-समस्या कितनी कठिन है और उसके कारण आगे चलकर सुधार के कार्य में कैसी पेचीदगियाँ सामने आयेंगी, तो भी उसने भारतवर्ष के स्वास्थ्य एवं शिक्षा तथा कृषि सम्बन्धी सुधारों के लिये बहुत अधिक प्रचार और कार्य किया। आज चाहे हम उसकी इन अप्रत्यक्ष सेवाओं का हाल न जानते हों, पर उन चालीस-पचास वर्षों में यहाँ जो सुधार हुए हैं, उनका कुछ श्रेय मिस नाइटिंगेल को भी अवश्य है।

सेवा-धर्म की महत्ता—

मिस नाइटिंगेल ने सामान्य विद्या-बुद्धि की और अनेक बन्धनों में जकड़ी हुई स्त्री होने पर भी केवल 'सेवा-धर्म' का पालन करके इतनी उच्च पदवी प्राप्त करली थी कि संसार के सबसे बड़े साम्राज्य की आदर्श माने जाने वाली अधीश्वरी विक्टोरिया तथा उनकी पुत्री—जो जर्मनी के कैसर की पुत्रवधू थी—उससे मित्रवत् व्यवहार करती थीं और अनेक सम्राट तथा सेनाध्यक्ष भी उसे बड़ी शिष्टता तथा विनयपूर्वक पत्र लिखते थे। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है, और जो लोग समझते हैं कि संसार में किसी बड़ी सत्ता या बड़ी धनराशि का स्वामी होने पर ही मनुष्य उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर सकता है, उनकी आँखें खोलने वाला है। धन और सत्ता का भी महत्व अवश्य है पर तभी जब कि उन्हें सदाचार और सचाई के साथ प्राप्त किया जाय, अन्यथा एक डाकू के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पास भी दस-बीस लाख की सम्पत्ति होने से वह क्या लाभ उठाता है ? वेश्याएँ भी लाखों की संपत्ति इकट्ठी कर लेती हैं, पर आज तक उनमें से किसी की भी प्रशंसा सभ्य समाज में सुनी गई है ?

नाइटिंगेल ने अपने उदाहरण द्वारा यह दिखला दिया कि मनुष्य चाहे छोटे-से-छोटे काम में हाथ डाले, पर यदि वह उसे सचाई, ईमानदारी और निःस्वार्थ भाव से पूरा कर दिखाता है, तो वह अवश्य लोगों की प्रशंसा और सम्मान का अधिकारी बन सकेगा। इसके विपरीत जो केवल दिखावट, चालाकी, धूर्तता के आधार पर आगे बढ़ने की चेष्टा करेगा और भीतर स्वार्थ-की भावना रखकर ऊपर से निःस्वार्थता का ढोंग करेगा वह अगर लोगों के भ्रम में पड़ जाने से 'आदरणीय' बन भी जाय, तो उसकी यह सफलता क्षण-स्थायी ही होगी।

इस दृष्टि से जब हम अपने देश के सार्वजनिक क्षेत्र की दशा पर विचार करते हैं, तो बड़ी निराशा होने लगती है। हमारे यहाँ क्या राजनैतिक क्षेत्र और क्या सामाजिक अथवा धार्मिक—कहीं भी ठोस कार्यकर्त्ता ढूँढ़ने पर भी एकाध ही कठिनता से मिल पाता है। राजनैतिक क्षेत्र में तो जैसा भ्रष्टाचार फैला है और चोटी के नेता से लेकर साधारण कार्यकर्त्ता तक में जैसी स्वार्थ-भावना भरी पड़ी है, उनसे सर्वत्र असंतोष उत्पन्न हो गया है। आज जिसके मुँह से सुनो, राजनैतिक नेताओं की निन्दा ही सुनाई पड़ती है और कोई उन पर विश्वास करने को तैयार नहीं होता। सामाजिक क्षेत्र में यहाँ अधिकाँश लोग लकीर पीटने वाले ही हैं।

वे लोग कभी चाहें, तो सुधार संबन्धी लम्बी-चौड़ी बातें भले ही कर लें, पर जब उनको कार्य-रूप में परिणित करने का अवसर आता है, तो वही 'ढाक के तीन पात' दिखाई पड़ते हैं। वे परिवार के, बुजुर्गों के, या जातीय पंचों के विरोध का नाम लेकर पुरानी पद्धति का ही पालन करने लग जाते हैं। धार्मिक क्षेत्र में तो हालत सबसे अजीब है। जो लोग जितने ही अधिक धार्मिक बनते हैं, वे समाज से, पास-पड़ौसियों से, जनता से उतना ही दूर रहने की चेष्टा करते हैं। यद्यपि वे किसी-न-किसी प्रकार जनता के आधार पर ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवन निर्वाह करते हैं, पर सदा 'संसार' से अलग रहने का दावा किया करते हैं।

इस प्रकार हमारे देश का सेवा-क्षेत्र एक प्रकार से निष्क्रिय पड़ा है। कहने को बहुत सी धर्म-समाजें जातीय सुधार सभाएँ सेवा समितियाँ, पशुरक्षिणी सभा आदि स्थापित हैं और उनमें से कितनी ही विभिन्न कार्य-क्रमों पर लाखों रुपया खर्च भी किया करती हैं, पर वास्तविक उन्नति अथवा सुधारों के कोई चिन्ह दिखाई नहीं पड़ते। जात-पाँत के झगड़े, विवाह में अपव्यय मरण-भोज, भिखारियों को दान आदि के सम्बन्ध में बड़ी-बड़ी सुधार की बातें सुनने में आती हैं, पर वर्षों बीत जाने पर भी इनके प्रचलन में कोई कमी दिखाई नहीं पड़ी देखी जाती। बात यही है कि इनमें से किसी भी क्षेत्र में कोई सच्चा कार्यकर्त्ता अपना-तन-मन-धन लगाकर सुधार के लिये कृत संकल्प नहीं हुआ। अगर यहाँ भी फ्लोरेन्स नाइटिंगेल के समान दस-पाँच कार्यकर्त्ता आगे बढ़कर सुधारों के लिये अपने आपको अर्पित कर देते तो सुधारों की गाड़ी अवश्य चल पड़ती और हमको प्रति-दिन इस दिशा प्रगति होती दिखाई देती।

पर मिस फ्लोरेन्स का मार्ग दूसरा था। उन्होंने 'नर्स' जैसे समाजोपयोगी और परोपकार के पेशे की दुरवस्था देखी तो तत्कालीन नर्सों को उपदेश देने अथवा उनके संचालकों की नुक्ताचीनी करने के बजाय, स्वयं उस काम को पूरी तरह से सीखा और कठिन से कठिन अवसर आने पर भी ऐसी उत्तमतापूर्वक उसका निर्वाह किया कि आज तक लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। आजकल होने वाले युद्धों का नक्शा पहले की अपेक्षा बहुत बदल गया है, नये-नये आविष्कारों के कारण युद्ध-कला में जमीन आसमान का अन्तर पड़ गया है। इस समय यदि रण-क्षेत्र में कोई बात पूर्ववत् और आशायुक्त रूप में दिखलाई पड़ती है तो वह चिकित्सकों और नर्सों द्वारा बिना शत्रु-मित्र और छोटे-बड़े के भेद भाव के घायलों और पीड़ितों की सेवा सुश्रूषा किया जाना है। और यह भी प्रत्येक को स्वीकार करना पड़ेगा कि इस आदर्श सेवा-संस्था का अधिकांश श्रेय फ्लोरेन्स नाइटिंगेल को ही है, जिसने सबसे पहले साहसपूर्वक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हर तरह की कठिनाइयों और खतरों को अपने ऊपर लेकर इसमें भाग लेने वाले आगामी व्यक्तियों का मार्ग प्रशस्त किया।

स्वास्थ्य के निर्बल हो जाने पर भी फ्लोरेंस ९० वर्ष की आयु तक जीवित रही। अन्तिम दिनों में उसको उन्निद्र रोग हो गया था, जिससे उसे रात्रि के समय बहुत कम नींद आती थी। ऐसे समय वह सन्त पुरुषों के रचे भक्ति-पूर्ण ग्रन्थों को पढ़ कर आत्म-शान्ति प्राप्त किया करती थी। वह यह भी समझती थी कि जिस उद्देश्य को लेकर वह चली थी, वह अच्छी तरह पूर्ण हो गया और प्रति दिन उन्नति करता जाता है। इसीसे उसे पूरा आत्म-सन्तोष और प्रसन्नता मिलती रहती थी। इसी लिये १३ अगस्त १९१० को जब उसका देहावसान हुआ तो वह यह विश्वास साथ लेकर मरी कि उसने 'ईश्वरीय आदेश' का पालन कर दिया।

इस प्रकार के कार्यों में यह ख्याल नहीं करना चाहिये कि हम तो सामान्य मनुष्य हैं, हमारी शक्ति और साधन बहुत कम हैं, हम दूसरों का क्या उपकार कर सकते हैं? परोपकार के लिये मुख्यतः मन की शुद्ध भावना और हृदय की सचाई आवश्यक होती है। यदि हम इनका आश्रय ग्रहण करके कार्यारम्भ कर दें, अकेले कुछ न कर सकें तो किसी संस्था या संगठन के सहयोग से ही कुछ करने लगें, तो धीरे-धीरे कुछ समय में ही हमको आशातीत सफलता प्राप्त हो सकेगी। इस सम्बन्ध में भारतीय स्त्रियों का कर्तव्य और उत्तरदायित्व और भी अधिक है, क्योंकि वे अपने को सार्वजनिक-सेवा के और भी अनुपयुक्त मानती हैं और इसलिये घर-गृहस्थी के धन्धे के सिवाय अन्य दृष्टियों से उनका जीवन सर्वथा निष्क्रिय रूपसे व्यतीत होता है। उनको मिस फ्लोरेन्स नाइटिंगेल से अवश्य प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिये। फ्लोरेंस के समय में इंगलैण्ड के शिष्ट वर्ग की स्त्रियों की अवस्था भी भारतीय स्त्रियों के समान थी। पर उसे असामान्य समझ कर उसने मानव सेवा के मार्ग पर कदम बढ़ा दिया और हजारों लाखों का उपकार करने के साथ ही अपने नाम को भी अमर कर दिया।

युग निर्माण प्रेस, मथुरा में मुद्रित।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन कथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिख कर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैं०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

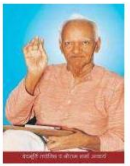

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्द्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अदभूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org